

# डॉ चंद्रा त्रिखा के यात्रा वृत्तांत

प्रवीण तायल<sup>1</sup>, प्रोफेसर सुनीता सिंह<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार हरियाणा

<sup>2</sup>शोध निर्देशिका, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

## ABSTRACT

डॉ. चंद्र त्रिखा जन्म: 9 जुलाई, 1945 को पाकपटन (अब पाकिस्तान में)। शिक्षा: एम.ए., साहित्य रत्न, पी-एच.डी.। कार्यक्षेत्र: 1964 से अब तक (2017) विभिन्न दैनिक समाचार-पत्रों में संपादन कार्य एवं पत्रकारिता। प्रकाशित कृतियाँ: 22 कृतियाँ। संप्रति: संपादक, डेली युगमार्ग, डैमोक्रैटिक वर्ल्ड। संपर्क: 473, सेक्टर 32-ए, चंडीगढ़। दूरभाष: 9417004423। डॉ. अशोक गर्ग जन्म: 19 अक्टूबर, 1952 को कैथल (हरियाणा) में। शिक्षा: एम.बी.बी.एस. एम.डी (मेडिसिन)। कार्यक्षेत्र: आपातकाल में प्रचारक जीवन, जेल यात्रा, संघ कार्य। कृति: 'तानाशाही में जूझता हरियाणा' पुस्तक में लेखन कार्य। संप्रति: नर्सिंग होग आरोग्य सदन, पिहोवा रोड, कैथल। दूरभाष: 09812029343 सुभाष आहूजा जन्म: 10 मार्च, 1954 को रोहतक में। शिक्षा: एम.कॉम., सी.ए.आई.आई.बी.। कार्यक्षेत्र: संघ प्रचारक (1977 से 1980 तक), पूर्व सहायक महाप्रबंधक पंजाब नेशनल बैंक/आपातकाल के सत्याग्रही, जेल यात्रा। संप्रति: संघ के हरियाणा प्रांत-संपर्क प्रमुख। संपर्क: 958/24, जगदीश कॉलोनी, रामनगर, रोहतक (हरि.)। यह पाठ hardcover संस्करण को संदर्भित करता है। 1971 के भारत-पाक युद्ध एवं बांग्लादेश के नाम से नए राष्ट्र के निर्माण ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की छवि को एक नया शिखर प्रदान किया था। एक ऐसा शिखर; जहाँ पहुँचकर; संतुलन बनाए रखना आसान नहीं होता। ये वे दिन थे; जब सरकारी तंत्र एवं सत्ता तंत्र भ्रष्टाचार के मामले में निरंकुश हो चुका था। सामान्य जनो का धैर्य जवाब देने लगा था। तत्कालीन प्रधानमंत्री उन दिनों भ्रष्टाचार की संरक्षक समझी जा रही थीं। वह अपने संगठन में फैले भीतरी असंतोष को भी कुचल रही थीं और प्रतिपक्षी आवाजों की भी घोर उपेक्षा कर रही थीं। इसके विरुद्ध संघर्ष में सर्वोदय समाज व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ; कुछ पुराने निष्ठावान एवं गांधीवादी कांग्रेसियों और समाजवादियों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही। अपने समर्पित नेताओं व कार्यकर्ताओं के बल पर संघ ने देश भर में भूमिगत आंदोलन; जन-जागरण एवं अहिंसक सत्याग्रह की जो इबारत दर्ज की; वह ऐतिहासिक थी।

उस समय की सरकार के खिलाफ समाज में गंभीर वैचारिक आक्रोश जाग्रत करने और बाद में चुनाव की सारी व्यवस्था संभालने में भी संघ के स्वयंसेवकों ने प्रमुख भूमिका निभाई। इस सारे घटनाक्रम में कई ऐसे गुमनाम कार्यकर्ताओं को अपने जीवन तक गँवाने पड़े। उनके अमूल्य बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। यह शुभ्र ज्योत्स्ना उन सब हुतात्माओं को विनम्र श्रद्धासुमन अर्पित करती है। आपातकाल के काले दिनों का सिलसिलेवार देखा-भोगा जीवंत सच है।

**How to cite this paper:** Praveen Tayal | Prof. Sunita Singh "Travelogues of Dr. Chandra Trikha"

Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.404-408, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50055.pdf



IJTSRD50055

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (<http://creativecommons.org/licenses/by/4.0>)



## परिचय



## साहित्य सभा में अपनी बात रखते डॉ. त्रिखा

रविवार की उस भोर में सूरज खिला-खिला था। सुबह करीब साढ़े आठ बजे चंडीगढ़-अंबाला हाईवे पर डॉक्टर चंद्र त्रिखा साहब की गाड़ी रुकी। पुराने एयरपोर्ट चौक के पास। स्वभाव से बेहद विनम्र त्रिखा साहब को पढ़ता बहुत पहले से रहा हूँ, मुलाकात पिछले कुछ वर्षों से है। उनसे कई बार दवा (होम्योपैथ) भी ले चुका हूँ। हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा के जानकार डॉ. त्रिखा फिलवक्त हरियाणा उर्दू अकादमी के उपाध्यक्ष हैं। उनसे कई बार हमारे अखबार में 'अचानक' कुछ लिखवाया गया। उनकी हस्तलिखित कॉपी को देखकर हैरान रहता था। एक तो

कुछ ही मिनटों में उनका लेख आ जाता, दूसरे उसमें कहीं कोई कट नहीं होता। यानी धारा प्रवाह बोलने की कला की मानिंद उनमें लिखने का भी वैसा ही गुण। इन दिनों यूट्यूब पर समसामयिक और रोचक मुद्दों पर उनका एक चैनल भी चलता है, जहां बिना नागा रोज एक नया विषय प्लैश करता है।[1]

### विचार-विमर्श

त्रिखा साहब (Dr. Chandra Trikha) के साथ बैठा। बैठते ही एक किताब की चर्चा कर डाली। उसकी समीक्षा जल्दी ही हमारे अखबार में छपेगी। थोड़ी दूर जाने पर हरियाणा साहित्य अकादमी की पूर्व निदेशक डॉ मुक्ता भी उसी गाड़ी में बैठीं। औपचारिक परिचय के बाद कुछ पलों की खामोशी रही, फिर बातों का सिलसिला शुरू हो गया। असल में हम लोग कैथल के लिए निकले थे। कैथल साहित्य सभा का सालाना कार्यक्रम था। डॉ. त्रिखा साहब दो पुरस्कारों को अपनी ओर से देते हैं। मैंने कुछ बातें कहीं। फिर त्रिखा साहब ने कुछ रोचक किस्से बताये। असल में एकदम ईमानदारी से कहूं तो मैं उन्हें सुनना ही चाह रहा था। एक तो उन्हें कई अखबारों में पढ़ता रहता हूं। दूसरे विभाजन के दर्द और उस समय की विभीषिका का उन्होंने देखा है। कई कार्यक्रमों में उनको सुन चुका हूं। उन्होंने अपने लाहौर यात्रा का जिक्र करते हुए एक बुजुर्ग महिला का जिक्र किया, जो एक होटल वाले से अक्स पूछतीं, उधर से कोई आया है क्या? उधर से उनका आशय भारत से होता था। पूरे किस्से का जिक्र करते हुए उन्होंने उस महिला की 'गंगा तो हमारी संस्कृति' है वाली बात को बताया तो हम लोग कुछ देर को चुप रहे। डॉ. मुक्ता ने कहा, 'हिंदू-मुस्लिम तो सियासत कराती है, हम सब इंसान हैं।' इसी दौरान मैंने उनकी किताब 'सूफी लौट आए हैं' का जिक्र किया। इसके अलावा उन्होंने उस कहानी को सुनाया जिसमें विभाजन के दौरान पाकिस्तान से एक परिवार भारत लौट आता है, लेकिन घर की बुजुर्ग महिला नहीं आती। उधर, वह मकान किसी को अलौट हो जाता है। बुजुर्ग महिला उस परिवार को घर में घुसने नहीं देती और अंततः धीरे-धीरे इंसानी जज्बातों और प्यार का ऐसा उमड़-घुमड़ होता है कि बुजुर्ग महिला सबकुछ उन्हें दे जाती है।[2]

साहित्य सभा के कार्यक्रम में डॉ. त्रिखा साहब ने बेहद बेबाकी से कहा कि महज लिखने के लिए नहीं लिखें। उन्होंने कहा कि एक कार्यक्रम कर चंद लोगों के बीच फोटो खिंचाकर फिर तालियां बजाने से कुछ नहीं होता। उन्होंने कहा कि समय के साथ बदलें। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आयें। स्तरीय लिखें। वाकई कुछ बातें बेशक 'चुभने' वाली हो सकती हैं, लेकिन यह सत्य है कि समय के साथ नहीं बदले तो सब गड़मड़ हो जाएगा।

हास्य विनोद...मैं ऑटो से चला जाता हूं

कैथल से लौटते वक्त जीरकपुर के पास डॉक्टर मुक्ता ने कहा कि वह पटियाला चौक के पास उतर जाएंगी। यहां से ऑटो से चली जाएंगी। मैंने कहा अगर आपका रूट दूसरा हो तो मैं यहां उतर जाता हूं, आप पंचकूला के रास्ते चले जाइयेगा। यहां से मुझे सीधे ऑटो मिल जाएगा। डॉ त्रिखा हंसे.. बोले आप लोग गाड़ी में ही रहें, मैं ऑटो से चला जाता हूं। इस दौरान सभी लोग मुस्कुरा दिए।[3]

### उनका ड्राइवर को प्यार से समझाना

इस सफर में कई बार ऐसे मौके आए जब डॉक्टर साहब को ड्राइवर साहब को मनाना पड़ा। वह उन्हें प्यार से समझाते। एक

बार वह फोन पर लंबी बात करने लगा तो डॉक्टर साहब ने ताकीद दी कि या तो रोकककर बात कर लो या फिर संक्षेप में बात करो। ऐसे ही एक-दो मौकों पर उसे समझाया, लेकिन विनम्रता से। वाकई ऐसे ही लोगों के बारे में कहा गया है, 'फलों से लदा पेड़ झुका रहता है।'

### आशय

#### काली नदी की रचना

नगिनत मासूम लोगों के शवों पर  
जिन्दगी को हादसे की शक्ल देकर  
नाखूनों को मांसपेशी से झटक कर  
साँस को संवेदनाओं से अलग कर  
किस तरह काली नदी के  
इन मुहानों पर  
कोई भी घर बनेगा—  
जिंदगी बंदूक की गोली नहीं है  
जिंदगी आतंक का दर्पण नहीं है  
जिंदगी मासूम-से  
उड़ते परिदे की रंगों में कैद धड़कन है  
जानता हूँ जब तुम्हारा  
हो गया आकाश छोटा  
अब सियासत की गुलेलें भी  
तुम्हारे हाथ में हैं  
याद रखो! इन रंगों में  
कैद धड़कन रुक गयी तो  
रोशनी, आकाश, पानी  
और इस काली नदी के  
इन मुहानों पर बना भूगोल  
सब कुछ,  
ढाँप लेंगे इस शहर को  
जिस शहर में  
सिर्फ कल की बात है  
भंगड़े पड़े थे  
और गिद्धा, बोलियाँ डाली गई थीं  
कौन-सी पहचान  
तुम आखिर बनाना चाहते हो  
गोलियों के शोर में तुम  
किस तरह सिमरन करोगे  
चार दूकानें जलाकर  
आग की इस रोशनी में  
कौन-सी गीता सुनोगे  
कान बहरे हो चुके हैं  
दोस्त! अब परदा गिराओ  
हो सके, तो वक्त है  
अब भी घरों को लौट जाओ



और फिर साँकल चढ़ाकर  
आइनों के सामने  
कोशिश करो, खुद को ज़रा पहचानने की  
और देखो किस तरह की  
जंगली तहज़ीब चेहरे पर उगी है  
किस क़दर खुद को  
पराए लग रहे हो  
यूँ सभी कुछ चल रहा है  
छप रहीं हैं ख़बरें, धड़ल्ले से  
सभी अख़बार में डूबे हुए हैं  
मगर अब सब सुर्खियाँ मद्धम  
अब कहीं दो-चार मर भी जाएँ तो  
कोई कहीं पर अब  
नहीं है चौक पड़ता  
आज जब हत्याएँ अपनी  
रोज़मर्रा ज़िंदगी का सहज हिस्सा बन चली हैं

गुलशनों की  
खुशबुओं की, सुरमई शामों, गुनगुनी धूप की बातें करेंगे  
इसलिए, बस इसलिए  
ऐ दोस्त! अब परदा गिराओ। [4]

### परिणाम

हरियाणा सरकार ने वरिष्ठ साहित्यकार डॉ चंद्र त्रिखा को हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा है। डॉ त्रिखा वर्तमान में हरियाणा उर्दू अकादमी के वाइस चेयरमैन हैं। साहित्य अकादमी के निदेशक पूर्णमल गौड़ का कार्यकाल 3 अगस्त को पूरा हो रहा है। इसी के चलते सरकार ने डॉ त्रिखा को यह अतिरिक्त जिम्मेदारी दी है। सीएम के प्रधान सचिव तथा पब्लिक रिलेशन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव राजेश खुल्लर ने इसके आदेश जारी किए हैं। [5]

एक कहावत की आत्मकथा

भाषा और संस्कृति के साझे को समझना खासा दिलचस्प है। यह दिलचस्पी तब और बढ़ जाती है। जब हम भाषाई कहन से जुड़े अक्श तलाशते हैं। Written by चंद्र त्रिखा



### छजू के चौबारे। फाइल फोटो।

भाषा और संस्कृति के साझे को समझना खासा दिलचस्प है। यह दिलचस्पी तब और बढ़ जाती है। जब हम भाषाई कहन से जुड़े अक्श तलाशते हैं। भारत की बोलियों और भाषाओं में कई ऐसी कहावतें हैं जिसके मायने के साथ उसके प्रचलन की वजहों को खंगालें तो पुराने दौर की कई ऐसी खनक सुनाई देगी, जो तब की सांस्कृतिक सुंदरता और उसके विस्तार की खुदगवाही हैं। ऐसे ही एक लोकप्रिय कहावत पर विशेष। [6]

### जो सुख छजू के चौबारे...

कहावतें बेबुनियाद नहीं होतीं। उनका एक अपना इतिहास होता है। यह अलग बात है कि कहावतें जब चल निकलती हैं, तो इतिहास कहीं हाशिए पर सरक जाता है। ऐसी ही एक मशहूर कहावत है, 'जो सुख छजू दे चौबारे, ओह बलख न बुखारे।' छजू, बलख, बुखारा, इन तीनों का अपना परिचय है। बलख और बुखारा दो समृद्ध शहर रहे हैं। दोनों अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग 'सिल्क रूट' से जुड़े महत्वपूर्ण व समृद्ध व्यापारिक केंद्र थे। समृद्धि के साथ-साथ वहां के लोग कला, संस्कृति, साहित्य, संगीत से भी गहराई से जुड़े थे। आम चर्चा यही होती थी कि इन दोनों

शहरों में सभी सुख हैं। अब रहा 'छजू'। मेरे एक प्रिय दोस्त हैं आत्मजीत। चर्चित नाटककार हैं। हमें एक बार एक साथ पाकिस्तान जाने का मौका मिला। बहुत सी ऐतिहासिक इमारतों व चर्चित बाजारों में घूमे। तब भी मन में एक जिज्ञासा थी कि छजू को तलाशा जाए।

तब वक्तकम था। पता नहीं चल पाया। कुछ समय बाद मौका मिला तो बेहद दिलचस्प बातें खुलीं। पता चला कि छजू सिर्फकल्पित पात्र नहीं था।

### जौहरी था छजू

लाहौर के अनारकली रोड पर छजू का चौबारा था। छजू उन दिनों लाहौर का एक प्रमुख जौहरी था। पूरा नाम था लाला छजूराम भाटिया। दोमंजिले आवास की पहली मंजिल पर उसका कारोबार था। दूसरी मंजिल पर परिवार। उसी की छत पर उसने बनाया था- छजू का चौबारा। इस चौबारे को फकीरों के डेरे के रूप में प्रयोग किया जाता था। इस चौबारे पर फकीरों की धूनी भी रमती थी और भजन-कीर्तन व सूफियों का नृत्य भी चलता था।

छज्जू को अध्यात्म की ऐसी लगन लगी कि धीरे-धीरे ज्यादा वक्त वो जप-तप में बिताने लगा। उसने अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा फकीरों, भक्तों व जरूरतमंद लोगों पर खर्च करना शुरू किया। शीघ्र ही उसे छज्जू भगत कहा जाने लगा। लोग तब अक्सर कहते थे कि इस चौबारे पर आकर रूहानी सुकून मिलता है। यहां सभी सुख मिलते थे। भूखे को रोटी, नंगे को कपड़ा और अगले सफर पर रवाना होने से पहले खाने-पीने की रसद और कुछ सिक्के ताकि वक्त-बेवक्त की जरूरत पूरी हो जाए।[7]

### चौबारे की गवाही

मन में जिज्ञासा थी। उस चौबारे को ढूंढ़ा जाए। पुराने रिकार्ड, किताबें व पुराने लोगों को खंगाला तो दिलचस्प ऐतिहासिक गवाहियां खुल गईं। लाहौर में बहुत कुछ है जो हमें विरासत से जोड़ता है। शहर के मेयो अस्पताल के साथ ही मौजूद हैं इस चौबारे के खंडहर। छज्जूराम भाटिया उर्फ छज्जू भगत, दरअसल शाहजहां के समय में हुआ था। उसकी उम्र व जन्म-वर्ष का तो पता नहीं चलता, लेकिन उसने आखिरी सांस 1696 में ली थी। उसकी मृत्यु भी रहस्यमय रही थी। किंवदंती है कि मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व वह चौबारे के कोने में स्थित अपनी तप-गुफा में चला गया था और बाद में उसका कोई अता-पता नहीं चला। उसका चौबारा फकीरों का डेरा बन गया। फकीर दिन में वहां धमाल नृत्य करते और तालियों के बीच गाते, 'जो सुख छज्जू दे चौबारे, ओह बलख न बुखारे।' प्राप्त ऐतिहासिक दस्तावेज के अनुसार महाराजा रणजीत सिंह अपने शासनकाल में यहां अक्सर फकीरों से मिलने आ जाया करते थे। वहां उन्होंने छज्जू भगत की स्मृति में एक मंदिर भी बनवा दिया था। मंदिर और फकीरों के लिए हर माह वे एक तय राशि भी भिजवाते रहे। अब भी उन बचे-खुचे खंडहरों के सामने शीश नवाने लोग हर मंगलवार और वीरवार को आते हैं।[8]

### निष्कर्ष

#### विरासत की रक्षा

लाहौर के मेयो अस्पताल के साथ ही बना है शम्स शहाबुद्दीन तीमारदारी घर। चौबारे का खंडहर भी कायम है। मेयो अस्पताल वालों ने फैसला किया कि इस खंडहर को तोड़ दिया जाए ताकि अस्पताल का विस्तार हो सके। लोगों के विरोध और इतिहास व मीडिया से जुड़े लोगों की कड़ी आपत्तियों के बाद तोड़ने का फैसला स्थगित कर दिया गया। इस संबंध में इतिहासकार सुरेंद्र कोछड़ ने भारत सरकार से भी दखल देने की अपील की है। उनकी दलील है कि यह विरासती संपदा है और इसे कानूनी रूप से भी तोड़ा नहीं जा

सकता। वैसे पुराने लाहौर में इस जगह के खंडहर भी अब बोलने लगे हैं। अब पुराने चौबारे के काल्पनिक चित्र भी बनाए जाने लगे हैं। इतिहासकार लतीफ ने इन चित्रों को पुरानी जानकारी के आधार पर छपवाया भी है।

अब इस विलक्षण स्थान के आसपास अस्पताल के कर्मचारियों के आवास भी बन गए हैं। वहां तक पहुंचने के लिए इनके घरों के बीच संकरे रास्तों से गुजरना होता है। मगर निस्वत रोड व रेलवे रोड के मध्य में स्थित इन खंडहरों पर अब इबादत होती रहती है। हालांकि वे दिन गए जब बात-बात पर कह दिया जाता था- जो सुख छज्जू दे चौबारे

ओह, बलख न बुखारे।

एक सुखद बात है कि छज्जू का नाम और उससे जुड़ी संस्कृति बचाने के लिए पाकिस्तान का सोशल मीडिया व वहां के कुछ बुद्धिजीवी पूरी तरह सतर्क हैं और मोर्चे पर डटे हैं, यह कहते हुए कि यह हमारा विरसा है।[9,10]

### चौबारा और बाबा

छज्जू के चौबारे के साथ ही लगा उदासीन संप्रदाय के एक संत बाबा प्रीतम दास का छोटा सा मंदिर भी था। बाबा प्रीतम दास वही संत थे, जिन्होंने अपने समय के चर्चित संत बाबा भुम्भन शाह को दीक्षा दी थी। उनकी ख्याति तब तो थी ही, आज भी काफी है। सिरसा, फाजिल्का, अबोहर, फतेहाबाद आदि इलाकों में बाबा भुम्भन शाह आज भी पूरे कंबोज समुदाय में पूजे जाते हैं। कहा तो यह भी जाता है कि औरंगजेब के शासन में दो स्थानों को खास अहमियत दी गई थी। एक स्थान था पीर ऐन-उल-कमाल का मकबरा और दूसरा छज्जू भगत का मंदिर।[11]

### प्रतिक्रिया दें संदर्भ

#### व्यवसायिक अनुभव:

1. उप संपादक: दैनिक हिंदी मिलाप - जालंधर 1964-1966
2. मुख्य उप संपादक: दैनिक वीर प्रताप - जालंधर/अंबाला 1966-1970
3. स्थानीय संपादक: दैनिक हरियाणा पत्रिका (चंडीगढ़)
4. राजस्थान पत्रिका का प्रकाशन - 1970-1972
5. संवाददाता: दी ट्रिब्यून ग्रुप 1974-1988
6. प्रधान संपादक: दैनिक जनसंदेश (दिल्ली- गुड़गाँव) 1989-1992
7. प्रमुख संवाददाता: दैनिक जागरण, चंडीगढ़- 1992-1994
8. संस्थापक सम्पादक: युगमार्ग (अंग्रेजी दैनिक) 1994 से अब तक
9. सम्पादक: डैमोक्रेटिक वर्ल्ड अंग्रेजी-हिंदी 2009 से अब तक
10. निदेशक: हरियाणा साहित्य अकादमी - 2001-2005 तक 2019 से अब तक
11. निदेशक: हरियाणा संस्कृत अकादमी - 2005-2009

#### सम्मान:

1. सौहार्द-सम्मान - उत्तर प्रदेश सरकार
2. शिरोमणि साहित्यकार-सम्मान - पंजाब सरकार
3. हिन्दी सेवी-सम्मान- हरियाणा सरकार

#### प्रकाशन:

#### पाँच काव्य संग्रह-

1. पाषाण युग
2. शब्दों का जंगल
3. दोस्त अब पर्दा गिराओ
4. यह और बात है
5. चलो नई वेबसाइट खोलें

#### जीवनी संस्मरण-

- 1) मोरारजी देसाई
- 2) जयप्रकाश नारायण

**ऐतिहासिक दस्तावेज़-**

1. वे 48 घंटे
2. वे दिन वे लोग
3. टूटी दीवार के आर-पार
4. एक शहर की आत्मकथा
5. सूफी लौट आए हैं
6. विभाजन गाथाएं
7. विभाजन : एक काला अध्याय

**संपादन:** 10 संकलन।

**अन्य कृतियाँ-**

1. हरियाणा की सभ्यता,
2. बड़ी रौनकें हैं फकीरों के डेरे

**विदेश यात्राएँ:** नेपाल, पाकिस्तान, सूरीनाम, जर्मनी में भारत का साहित्यिक प्रतिनिधित्व

**सम्प्रति:**

1. निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी
2. उपाध्यक्ष एवं निदेशक, हरियाणा उर्दू अकादमी

